गांधी जी के प्रमुख आंदोलनों में हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका

डॉ0 (कु0) पंकज शर्मा
असि0 प्रोफे0, इतिहास विभाग, एन0ए0एस0 कॉलिज, मेरठ।

सारांश

गांधी जी का भारत की धरती पर दक्षिणी अफ्रीका से आगमन जनवरी 1915 में हुआ। उनकी आत्मा भारतवासियों पर अंग्रेजों द्वारा किये जा रहे अत्याचारों को देखकर अत्यंत आहत हुई। उन्होंने भारत को स्वतंत्र कराने के भरसक प्रयास किये। अपने अफ्रीका के अनुभव द्वारा उन्हें यह बात भली भाँति विदित हो चुकी थी कि हिंसा को कभी हिंसा से नहीं हराया जा सकता, हराया जा सकता है तो केवल अहिंसा से। इसके लिए जनसहयोग आवश्यक था और जनसहयोग के लिए आवश्यक थी जनजागृति। इसके लिए उन्होंने जनता को संगठित करके समय–समय पर विभिन्न आन्दोलन चलाये। जिसमें उन्हें जनता का भरपूर सहयोग मिलने के साथ ही तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं का भी अपार समर्थन मिला।

महत्वपूर्ण शब्द– *सत्याग्रह, दमनकारी, सक्रिय, स्थगन, अराजकतावादी।*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः
डॉ0 (कु0) पंकज शर्मा, *"गांधी जी के प्रमुख आंदोलनों में हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका"*
शोध मंथन,
सितम्बर 2017,
पेज सं0 7–12
http://anubooks.com/?page_id=581
Artcile No. 2 (SM 440)

डॉ0 (कु0) पंकज शर्मा

पत्रकारिता प्रजातंत्र का चतुर्थ स्तम्भ है। इसका प्रमुख कार्य शासन की नीतियों एवं योजनाओं को जनता तक पहुंचाने के साथ उसकी आलोचना करना भी है। वहीं जनता को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने का कार्य भी पत्रकारिता द्वारा किया जाता है। आज भारत स्वतंत्र है, पत्रकारिता के क्षेत्र में पत्रकारों एवं लेखकों को अत्यधिक स्वतंत्रता प्राप्त है लेकिन सन् 1947 के पूर्व जब भारत परतंत्र था तब पत्रकारिता पर अनेक प्रकार के प्रतिबन्ध अंग्रेज सरकार के द्वारा लगाये गये थे। फिर भी अनेक पत्रकारों ने पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से जनता को जागरूक करने के लिए कार्य किया। विशेषतः गांधी जी की नीतियों एवं आन्दोलनों को जन–जन तक पहुंचाने एवं उन्हें लोकप्रिय बनाने में हिन्दी पत्रकारिता का महत्त्वपूर्ण योगदान है जिसे विस्मृत नहीं किया जा सकता।

भारत में गांधी जी का प्रथम बड़ा आन्दोलन चम्पारन सत्याग्रह था। उत्तर बिहार में किसानों को अपने यूरोपीय मालिकों के लिए अपनी भूमि के एक निश्चित भाग पर नील उगाना पड़ता था। इस व्यवस्था के विरोध में जनता ने अपनी आवाज उठाई परन्तु विरोध करने पर उनके नेताओं को निम्न अदालत से सजा हो गयी। गांधी जी ने किसानों का साथ दिया। 16 अप्रैल 1917 को चम्पारन के जिला मजिस्ट्रेट ने गांधी जी को चम्पारन छोड़ने का नोटिस दिया किन्तु गांधी जी ने इंकार कर दिया। गांधी जी ने चम्पारन में कई महीनें प्रवास करके किसानों के नील के बदनुमा दाग को धो दिया। गांधी जी ने यह कार्य न तो कांग्रेस के नाम पर किया और न ही विभिन्न समाचारपत्रों की सहायता ली। हालांकि कुछ पत्रों ने इसकी आलोचना की[1] परन्तु इसका परिणाम बहुत ही सुखद रहा।

इन दिनों अधिकतर पत्रों में सामाजिक लेख छपते थे। परन्तु 1917 के इस आन्दोलन के बाद हिन्दी पत्रों के द्वारा राष्ट्रीय कार्यक्रमों पर खूब लिखा जाने लगा।[2] चम्पारन में गांधी जी के दैनिक कार्यों का वर्णन साप्ताहिक पत्र 'भारत मित्र' में अधिक छपा। 'भारत मित्र' ने लिखा कि चम्पारन के किसानों की ऐसी समस्या थी जिसकी ओर सरकार को ध्यान दिया जाना चाहिए था। उसने गांधी जी के साहस की प्रशंसा की परन्तु समझौते को अपूर्ण बताया।[3] 'अभ्युदय' और 'पाटलिपुत्र' ने इस समस्या का साहसपूर्वक हल करने के लिए सरकार और गांधी जी दोनों को बधाई दी।[4]

गांधी जी का दूसरा बड़ा आन्दोलन असहयोग आन्दोलन था। पंजाब में जलियावाला हत्या काण्ड, खिलाफत आन्दोलन और सरकार की दमनकारी नीति के विरोध में गांधी जी को बाध्य होकर असहयोग आन्दोलन करना पड़ा। 'भारत मित्र; ने इस आन्दोलन को सही ठहराते हुए लिखा कि अत्याचारी सरकार के साथ किसी भी प्रकार का सहयोग करना किसी भी हिन्दुस्तानी को शोभा नहीं देता। भारत के लोगों को गांधी जी के साथ चलकर दासता से मुक्ति का प्रयत्न करना चाहिए।[5] 'प्रताप' ने सरकार के विरूद्ध कार्य करने को प्रत्येक भारतवासी का कर्त्तव्य बताया।[6] महात्मा गांधी ने असहयोग आन्दोलन के अन्तर्गत जिस स्वदेशी आन्दोलन पर बल दिया उसकी भूमिका पहले ही तैयार हो चुकी थी। इसके दर्शन हमें भारतेन्दु युग की 'कवि वचन सुधा', 'हरिश्चन्द्रिका', 'हिन्दी' एवं 'प्रदीप' आदि में होते हैं।[7] 'सरस्वती का स्वर' भी गांधी जी के आन्दोलन के पक्ष में था। यह पत्र लगातार लोगों को इस आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए

प्रेरित करता था। इसी प्रकार की शैली 'भारत जीवन' की थी। यह पूर्ण स्वतंत्रता और असहयोग का पक्षधर था।[8] 'प्रताप' ने अपने लेखों में याद दिलाई कि जब तक भारत स्वतंत्र नहीं होगा उसके कष्ट समाप्त नहीं होंगे और उस पर पहले की तरह अत्याचार होते रहेंगे। उसने गांधी जी के मार्ग का समर्थन करते हुए इस आन्दोलन में भाग लेने की अपील की।[9]

'स्वदेश' लगातार देश प्रेम से सराबोर लेख लिखकर लोगों को उत्साहित करता रहा। वास्तव में हिन्दी पत्रकारिता देश प्रेम में आकण्ठ डूबे लेख लिखकर लोगों को उत्साहित करती रही। इसके विपरीत अंग्रेजी का पत्र 'द टाइम्स ऑफ इण्डिया', 'पायनियर', 'इंग्लिश मैन' और 'स्टेट मैन' आदि इस आन्दोलन का विरोध कर रहे थे। इसलिए हिन्दी पत्र प्रायः इनमें छपी खबरों का खण्डन करते थे। पटना से निकलने वाला 'देश' लगातार गांधी जी के आन्दोलन के पक्ष में लिखता रहा। वह हिन्दू–मुस्लिम एकता बनाये रखने का पक्षधर था और जब इस आन्दोलन के स्थगन से देश में साम्प्रदायिक हिंसा फूट पड़ी तो उसने इसका दोष सरकार पर लगाया।[10] हिन्दी पत्रकारिता का स्वर राष्ट्रीय होने के कारण सरकार ने इसे कठोरता से दबाया। 'स्वराज', 'प्रताप' और 'वर्तमान' ने अत्यधिक उग्र रूप अपनाकर आन्दोलन का समर्थन किया। 'प्रताप' ने लिखा कि सरकार भारतीयों को स्वतंत्रता से वंचित करके केवल अमानवीय कार्य ही नहीं कर रही अपितु उसका यह कार्य अनैतिक एवं धर्म विरूद्ध भी है।[11] इन हिन्दी पत्रों में 'वर्तमान' का रवैया अन्य पत्रों से उग्र था। परन्तु यह समय–समय पर असहयोग आन्दोलन के कुछ कार्यक्रमों को चलाने के लिए सावधानी बरतने की सलाह भी देता था।[12]

'अभ्युद्य' ने गांधी जी को खिलाफत आन्दोलन में आंख मूंदकर सहयोग न करने की सलाह दी। इसने सरकार के क्रिमनल लॉ अमेण्डमेन्ट एक्ट का विरोध किया। परन्तु हिन्दी के कुछ ऐसे पत्र भी थे जिन्होंने इस आन्दोलन का विरोध किया, इनमें 'ज्ञान शक्ति', 'आनन्द' और 'सूर्य' आदि।[13] 'प्रताप' ने भी आन्दोलन स्थगन करने की आलोचना की। उसका मानना था कि चौरा–चौरी जैसी छोटी घटना के कारण गांधी जी को इसे स्थगित नहीं करना चाहिए था।[14] परन्तु 'आज' ने चौरा–चौरी काण्ड के परिणामस्वरूप लिये गये गांधी जी के इस कदम को उचित ठहराया। उसका मानना था कि देश गांधी जी के अहिंसा के मार्ग पर चलकर ही स्वतंत्रता प्राप्त कर सकता है। हिंसा से देश को कुछ प्राप्त नहीं होगा।[15]

गांधी जी का तीसरा बड़ा जन आंदोलन 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' था। सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ करने से पूर्व गांधी जी ने सरकार के विरूद्ध एक याचिका प्रस्तुत की और सरकार को चेतावनी दी कि यदि उन्होंने उनकी मांगे स्वीकार नहीं की तो वे सविनय अवज्ञा आन्दोलन करने के लिए बाध्य होंगे। सन् 1929 तक हिन्दी पत्रों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आ चुका था। अब वे साम्प्रदायिक प्रश्नों के स्थान पर राजनीतिक विषयों को अधिक महत्व देने लगे थे। 'आज' लगातार साइमन कमीशन का विरोध कर रहा था और स्वदेशी पर बल दे रहा था।[16] वायसराय द्वारा डोमेनियन की घोषणा का हिन्दी पत्रों ने स्वागत नहीं किया। 18 जनवरी 1930 को गांधीजी रविन्द्रनाथ टैगोर से मिले तो उन्होंने बताया कि रात–दिन विचार करने के बाद भी इस अंधकार को दूर करने का कोई समाधान नहीं सूझ रहा है। जबकि इन समस्याओं का यथाशीघ्र समाधान

खोजना आवष्यक है। इसके उपरान्त उन्होंने सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ किया। अधिकांष हिन्दी के पत्रों ने इस आन्दोलन का दष्ढ़तापूर्वक समर्थन किया। सरकार ने कई पत्रों के विरूद्ध तुरन्त कार्यवाही प्रारम्भ कर दी।

12 मार्च 1930 को प्रारम्भ हुई दांडी यात्रा का हिन्दी पत्रों ने स्वागत किया।[17] 'युद्ध की ललकार' ने सरकार के विरूद्ध सक्रिय भूमिका निभाने के लिए लोगों का आह्वान किया। 'आज' ने इसे भारत की स्वतंत्रता दिलाने का एक अच्छा अवसर माना।[18] 'अभ्युद्य' ने अत्यन्त कठोर भाषा का प्रयोग करते हुए लोगों से बड़े से बड़े बलिदान देने के लिए तैयार रहने को कहा। सभी हिन्दी पत्र सरकार की आज्ञा न मानने पर बल दे रहे थे। 'सुकवि' में भी वीर रस की कविता आजादी के दीवानों प्रकाशित हुई।[20] हिन्दी पत्रों ने 4 मई 1930 को गांधी जी की गिरफ्तारी का विरोध किया। 'चांद' ने लिखा कि सत्य और अहिंसा को हिंसा और पषु बल से सदैव के लिए दबाया नहीं जा सकता है।[21]

'आज' लगातार कांग्रेस और सविनय अवज्ञा पत्र के पक्ष में लिखता रहा। परन्तु सरकार विरोधी लेख लिखने के कारण सम्पादन का उत्पीड़न होने की वजह से अपने लेखों के लेखन में अधिक सावधान हो गया।[22] कुछ हिन्दी पत्र एक तरफ तो गांधी जी के आन्दोलन के तरीकों को सही बतला रहे थे परन्तु दूसरी ओर वे अराजकतावादियों की प्रषंसा में भी लेख लिख रहे थे।[23] 'प्रताप' लगातार सरकार के प्रेस अधिनियम का विरोध कर रहा था। इसलिए सरकार इस पत्र से नाराज थी। 11 नवम्बर 1931 को गोल मेज सम्मेलन लन्दन में होने की घोषणा के साथ सविनय अवज्ञा आन्दोलन और तेज हो गया।[24] 16 फरवरी 1931 को गांधी जी दिल्ली पहुंचे। कई दिनों की मुलाकात के बाद 5 मार्च को गांधी जी और लार्ड इरिवन के मध्य समझौता हुआ। इसी के साथ सविनय अवज्ञा आन्दोलन समाप्त हो गया। कुछ हिन्दी पत्रों ने समझौते की आलोचना की कि गांधी जी समझौते के द्वारा भारतीयों की कोई शर्त नहीं मनवा सके और सरकार का दमन पूर्ववत जारी है।[25]

गांधी जी का अन्तिम आन्दोलन 8 अगस्त 1942 को आरम्भ हुआ जिसने भारतीय राजनीति को अत्यधिक प्रभावित किया। अंग्रेज अधिकारी 1941 तक भारत से उतने ही ऊब गये थे जितना भारत उनसे। गांधी जी की 20 वर्श की अहिंसा ने साम्राज्य के भविष्य के प्रति उनका विश्वास नष्ट कर दिया।[26] वायसराय और उनकी कौंसिल के गृह सदस्य सर रेजिनाल्ड का कहना था कि युद्धोपरान्त वह भारत ये चले जायेंगे। परन्तु कांग्रेस इस बात पर विश्वास नहीं कर रही थी।[27] भारत का इतिहास लम्बे समय से स्थिर था। यह गतिहीनता भारतवासियों को रूष्ट कर रही थी और उनमें मायूसी की भावना उत्पन्न कर रही थी।

10 अगस्त की गिरफ्तारियों के पष्चात् हिन्दी पत्रों ने गांधी जी की गिरफ्तारी की आलोचना की और सरकार को गांधी जी से वार्ता करने की सलाह दी।[28] उसके पश्चात् अनेक हिन्दी पत्र जो खुलकर सरकार की आलोचना कर रहे थे, बन्द कर दिये गये। इसमें 'आज' ओर 'प्रताप' प्रमुख थे।[29] जगह–जगह हड़तालों का सिलसिला शुरू हो गया था परन्तु समाचार पत्रों

पर इतना कड़ा प्रतिबन्ध था कि खबरों को सामान्य रूप से छापा जाता था। सख्त पाबन्दियों के कारण लखनऊ का 'नेशनल हैराल्ड' और गांधी जी के 'हरिजन' एवं 'हरिजन सेवक' साप्ताहिक अनन्तकाल के लिए बन्द कर दिये गये। जो पत्र भारत छोड़ो आन्दोलन के समय निकलते रहे वे सरकार के द्वारा लगातार प्रताड़ित होते रहे। उदाहरण के लिए 'शक्ति', 'शुभचिंतक', 'सावधान कांग्रेस पत्रिका', 'कर्मवीर', 'देहाती दुनिया, 'सारथी' आदि पत्रों को मौखिक एवं लिखित चेतावनियां सरकार द्वारा अनेक बार दी गयीं। अन्त में 15 अगस्त 1947 में गांधी जी एवं उनके सहयोगियों के अथक प्रयासों से भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

इस प्रकार स्पष्ट है कि गांधी जी की नीतियों एवं आन्दोलनों को जन–जन तक पहुंचाने में समाचार पत्रों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने जहां अपने लेखों द्वारा जनता में जागृति लाकर संगठित करने का कार्य किया। वहीं आवश्यकता पड़ने पर अंग्रेजों की आलोचना के साथ–साथ गांधी जी की नीतियों की भी तटस्थ रूप से आलोचना की। चाहे इसके लिए उन्हें कितनी ही आर्थिक एवं वैधानिक कठिनाइयां झेलनी पड़ी। वह अपने कर्त्तव्य पथ से पीछे नहीं हटे क्योंकि तब पत्रकारिता का उद्देश्य मिशन था व्यवसाय नहीं। वह भारत को स्वतंत्रता मिलने तक निरन्तर गांधी जी एवं कांग्रेस का सहयोग करने के साथ जनता का मार्गदर्शन भी करते रहे।

संदर्भ–

1. *नवजीवन, मई 1917 ई0 (पत्रिका)*
2. *भारत मित्र, 30.11.1917*
3. *भारत मित्र, 10.12.1917*
4. *पाटलीपुत्र, 20.11.1917*
5. *भारत मित्र, 14.08.1920*
6. *डॉ0 लाल, वंशीधर, भारतीय स्वतन्त्रता और हिन्दी पत्रकारिता, वोहरा प्रकाशन, जयपुर, 1989, पृष्ठ 104*
7. *भारत जीवन, 20.11.1920*
8. *प्रताप, 03.08.1920*
9. *देश, 22.12.1921*
10. *प्रताप, 10.12.1922*
11. *आज, 09.11.1921*
12. *भटनागर, रामरतन, दि राईज एण्ड ग्रोथ ऑफ हिन्दी जर्नलिज्म, पृष्ठ 380*
13. *प्रताप, 24.02.1922*
14. *आज, 09.02.1922*
15. *आज, 09.02.1922 (सम्पादकीय)*
16. *आज, 02.11.1929*

17. *नवजीवन, 12.03.1930*
18. *आज, 23.02.1930*
19. *अभ्युदय, 14.03.1930*
20. *सुकवि, अप्रैल 1930*
21. *चाँद, 10.05.1930*
22. *आज, 20.01.1931*
23. *भविष्य, 05.02.1931*
24. *आज, 12.11.1932*
25. *प्रताप, 03.04.1931*
26. *चाँदीवाला, ब्रजकृष्ण गांधी जी की दिल्ली डायरी, खण्ड (2), पृष्ठ 151*
27. *तत्रैव, पृष्ठ 151*
28. *आज, 10.08.1942*
29. *डॉ0 जैन, रमेश, राजस्थान की हिन्दी पत्रकारिता जयपुर, 1989, पृष्ठ 179*